हिंदी संधि ट्रिक

स्वर संधि की परिभाषा

जब दो स्वर आपस में जुड़ते हैं या दो स्वरों के मिलने से उनमें जो परिवर्तन आता है, तो वह स्वर संधि कहलाती है। जैसे :

विद्यालय : विद्या + आलय

पर्यावरण : परी + आवरण

मुनींद्र : मुनि + इंद्र

स्वर संधि के प्रकार

स्वर संधि के मुख्यतः पांच भेद होते हैं:

दीर्घ संधि

गुण संधि

वृद्धि संधि

यण संधि

अयादी संधि

दीर्घ संधि :- *ट्रिक :- बड़ी मात्रा लगी हो*

दीर्घ संधि में कोई बड़ी मात्रा जरूर होगी।

जैसे - परीक्षा -परि + ईक्षा

भानूदय - भानु+ उदय,

मुनींद्र - मुनि+इंद्र

भोजनालय- भोजन + आलय,

गुण संधि :-

किसी शब्द में 'ए' व 'ओ' की मात्रा हो तो वहां गुण संधि होती है।

ट्रिक :- े , ो (ऐ और ओ) की एक मात्रा लगी हो

जैसे :- महा + उत्सव : महोत्सव (आ + उ = ओ)

आत्मा + उत्सर्ग : आत्मोत्सर्ग (आ + उ = ओ)

धन + उपार्जन : धनोपार्जन (अ + उ = ओ)

सुर + इंद्र : सुरेन्द्र (अ + इ = ए)

वृद्धि संधि :-

जहां शब्द में ऐ या औ की मात्रा लगी हो वहां वृध्दि संधि होगी।

ट्रिक :- दो मात्राएं ै , ौ (ऐ व औ) लगी हों।

जैसे:- महा + ऐश्वर्य : महैश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)

महा + ओजस्वी : महौजस्वी (आ + ओ = औ)

परम + औषध : परमौषध (अ + औ = औ)

जल + ओघ : जलौघ (अ + ओ = औ)

यण संधि :- *ट्रिक:- शब्द में य,र,व, के पहले आधा अक्षर आये*

वहां यण संधि होती है।

जैसे :- अति + अधिक : अत्यधिक **(इ + अ = य)**

प्रति + अक्ष : प्रत्यक्ष **(इ + अ = य)**

प्रति + आघात : प्रत्याघात **(इ + आ = या)**

अति + अंत : अत्यंत **(इ + अ = य)**

अयादि संधि :-ए, ऐ, ओ,औ की मात्रा न हो

ए, ऐ और ओ, औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

ट्रिक:- अय्, आय्, अव् और आव् का उच्चारण हो।

जैसे:- श्री + अन : श्रवण

पौ + अक : पावक

पौ + अन : पावन

नै + अक : नायक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-

शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। (क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

trick

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

व्यंजन संधि

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे -

क् + म = वाक + मय = वाङ्मय

च् + न = अच् + नाश = अंनाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास

त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

व्यंजन संधि

त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = ब्भ सत् + भावना = सब्भावना

त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = ब्भ भगवत् + भक्ति = भगवब्भक्ति

त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

व्यंजन संधि

त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च	उत् + चारण = उच्चारण
त् + ज = ज्ज	सत् + जन = सज्जन
त् + झ = ज्झ	उत् + झटिका = उज्झटिका
त् + ट = ट्ट	तत् + टीका = तट्टीका
त् + ड = ड्ड	उत् + डयन = उड्डयन
त् + ल = ल्ल	उत् + लास = उल्लास

व्यंजन संधि

त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

त् + श् = च्छ	उत् + श्वास = उच्छ्वास
त् + श = च्छ	उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट
त् + श = च्छ	सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

व्यंजन संधि

त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -

त् + ह = द्ध	उत् + हार = उद्धार
त् + ह = द्ध	उत् + हरण = उद्धरण
त् + ह = द्ध	तत् + हित = तद्धित

व्यंजन संधि

स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है।

जैसे -

अ + छ = अच्छ	स्व + छंद = स्वच्छंद
आ + छ = आच्छ	आ + छादन = आच्छादन
इ + छ = इच्छ	संधि + छेद = संधिच्छेद
उ + छ = उच्छ	अनु + छेद = अनुच्छेद

व्यंजन संधि

यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है।

म् + च् = किम् + चित = किंचित

म् + क = किम् + कर = किंकर

म् + च = सम् + चय = संचय

म् + त = सम् + तोष = संतोष

म् + ब = सम् + बंध = संबंध

म् + प = सम् + पूर्ण = संपूर्ण

व्यंजन संधि

म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यं जन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -

म् + य = सम् + योग = संयोग

म् + र = सम् + रक्षण = संरक्षण

म् + व = सम् + विधान = संविधान

म् + श = सम् + शय = संशय

म् + ल = सम् + लग्न = संलग्न

म् + स = सम् + सार = संसार

व्यंजन संधि

स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -

भ् + स् = ष अभि + सेक = अभिषेक

नि + सिद्ध = निषिद्ध

वि + सम + विषम

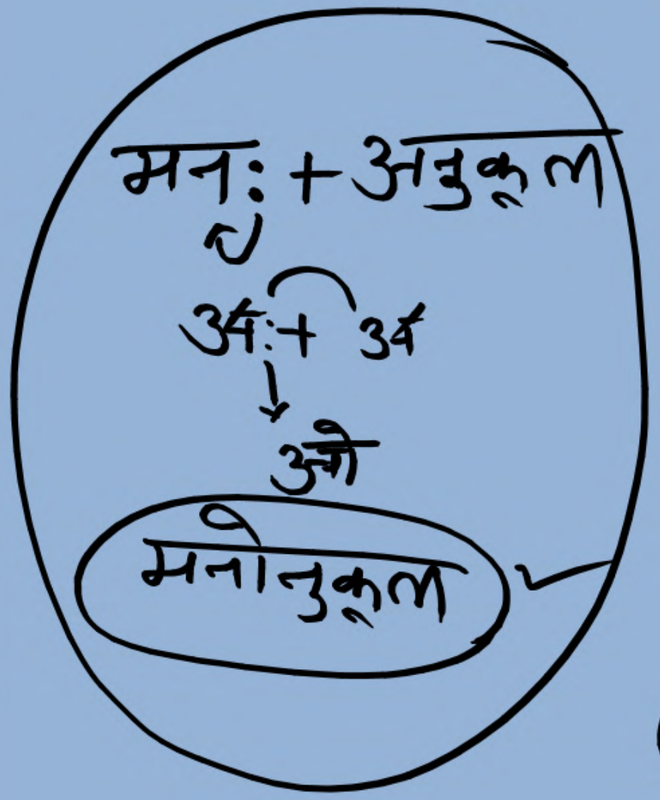

विसर्ग-संधि

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

अधः + गति = अधोगति

मनः + बल = मनोबल

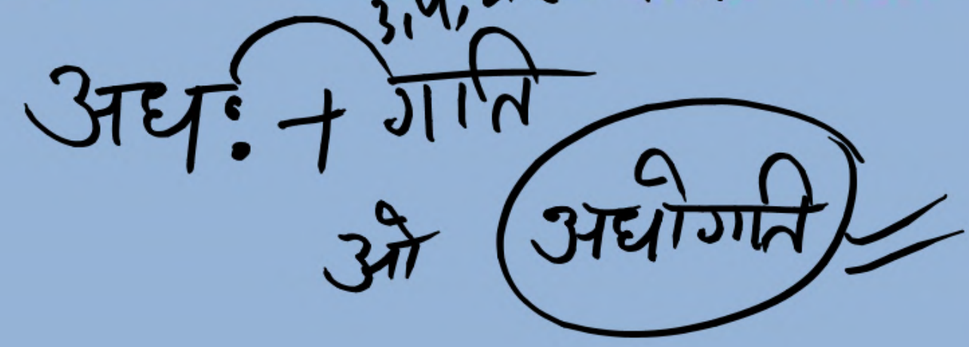

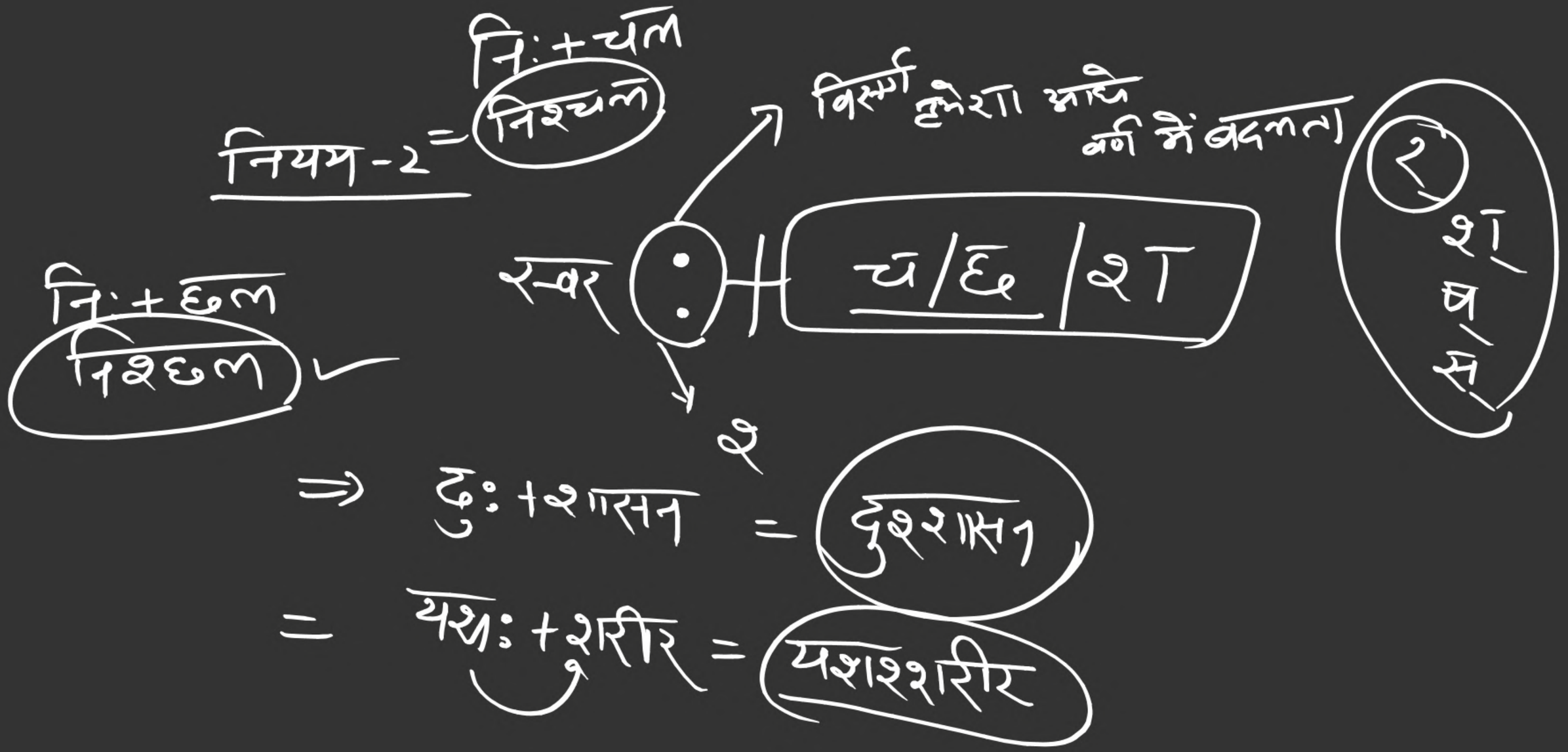
नियम-2 = नि: + चल
निश्चल
विसर्ग हटेगा। आगे वर्ण में बदलता
स्वर
च/छ/ट
२
२ श ष स
नि: + छल
निश्छल
⇒ दु: + शासन = दुश्शासन
= यश: + शरीर = यशश्शरीर

नियम - 3

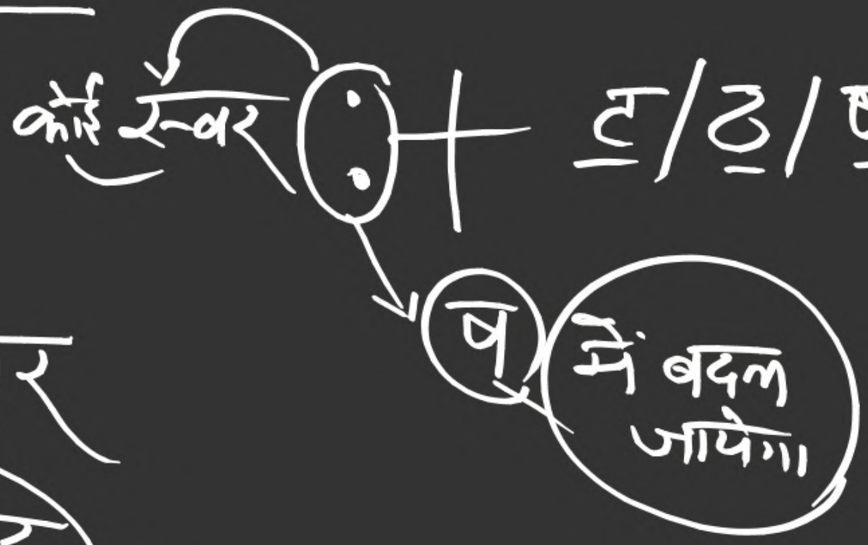

① धनुः + टंकार

⇒ धनुष्टंकार ✓

चतुः + टीका

चतुष्टीका ✓

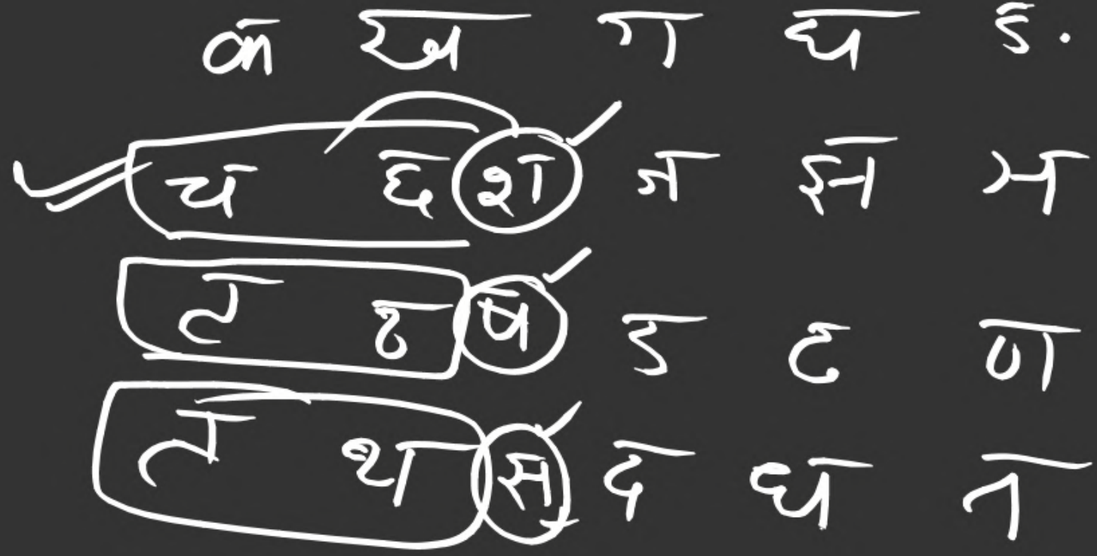
क ख ग घ ङ
च छ श ञ झ ञ
ट ठ ष ड ढ ण
त थ स द ध न

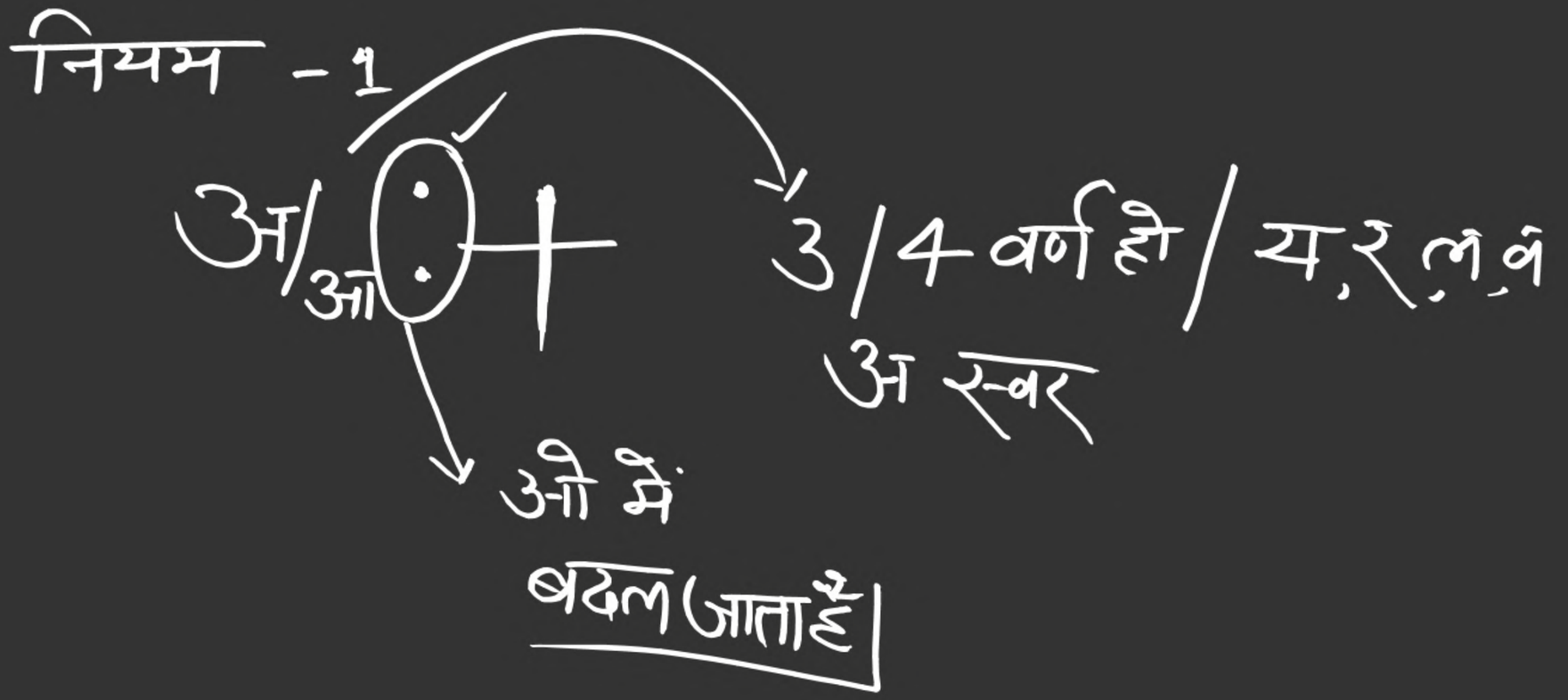
नियम - 1
अ/आ + उ/ऋ वर्ण हो/ य, र, ल, व
अ स्वर
ओ में
बदल जाता है

विसर्ग संधि

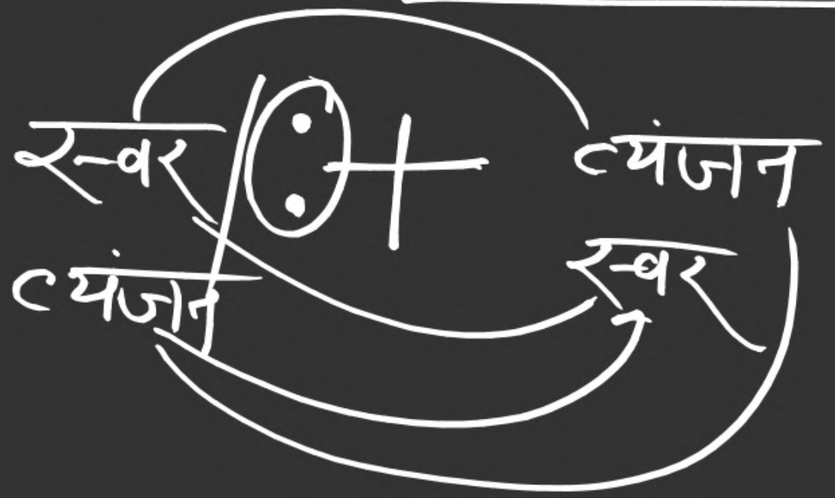

निः+आहार
निर्+आहार
निराहार ✓

निः+आशा
निराशा

विसर्गसंधि अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -

निः + आहार = निराहार , निः + आशा = निराशा

निः + धन = निर्धन

(3) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे -

(2) ✓

निः + चल = निश्चल

निः + छल = निश्छल

दुः + शासन = दुश्शासन

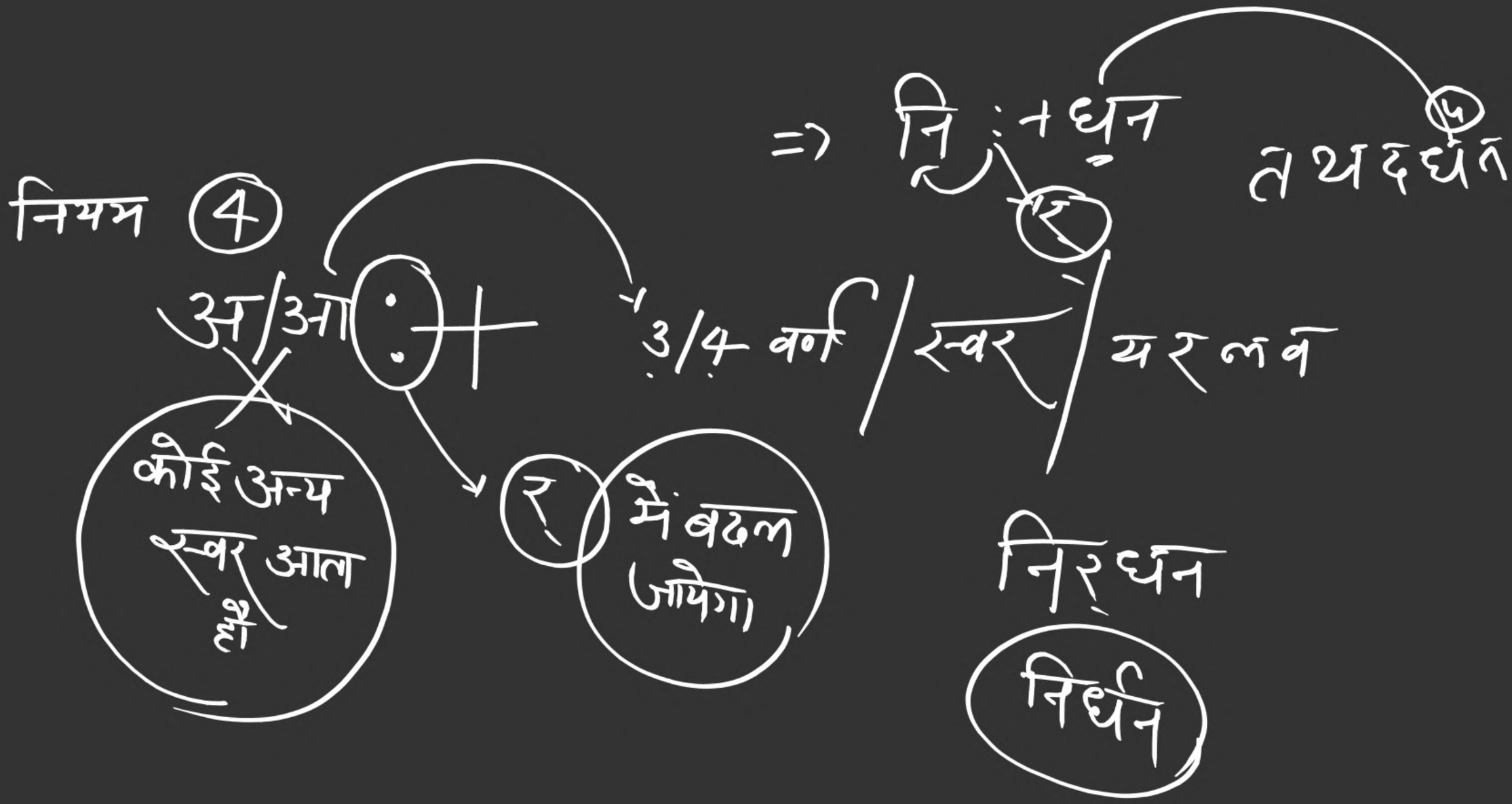
नियम (4)
अ/आ
+
३/४ वर्ण
स्वर
यरलव
कोई अन्य स्वर आता है
र्
में बदल जायेगा।
=> नि: + धन
तथदधन
र्
निरधन
निर्धन

विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे -

नमः + ते = नमस्ते

नि: + संतान = निस्संतान

दु: + साहस = दुस्साहस

(2) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से को ई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

नि: + कलंक = निष्कलंक

चतु: + पाद = चतुष्पाद

नि: + फल = निष्फल

नमः + ते नमस्ते

② निस्संतान

③ दुस्साहस

नि:+कलंक निष्कलंक

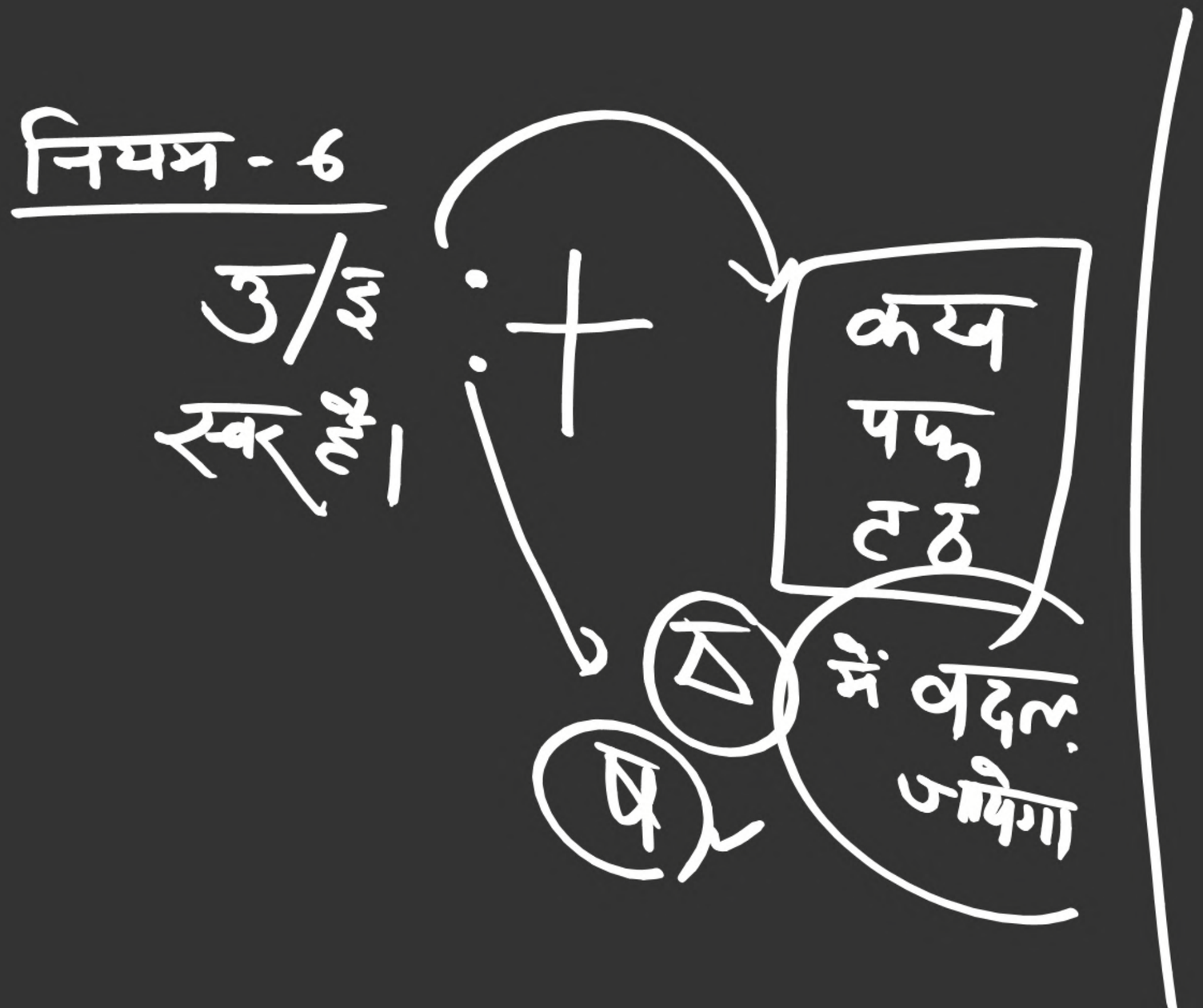
नियम - 6
उ/इ
स्वर है।
+
कर्म
पद
ट ठ
ट
ष
में बदल
जायेगा

नियम-5

कोई भी संख्या $\div$ त/स

$\div$ को $\times$ में बदल जायेगा

विसर्ग

विसर्गसे पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

जैसे -

निः + रोग = निरोग

निः + रस = नीरस

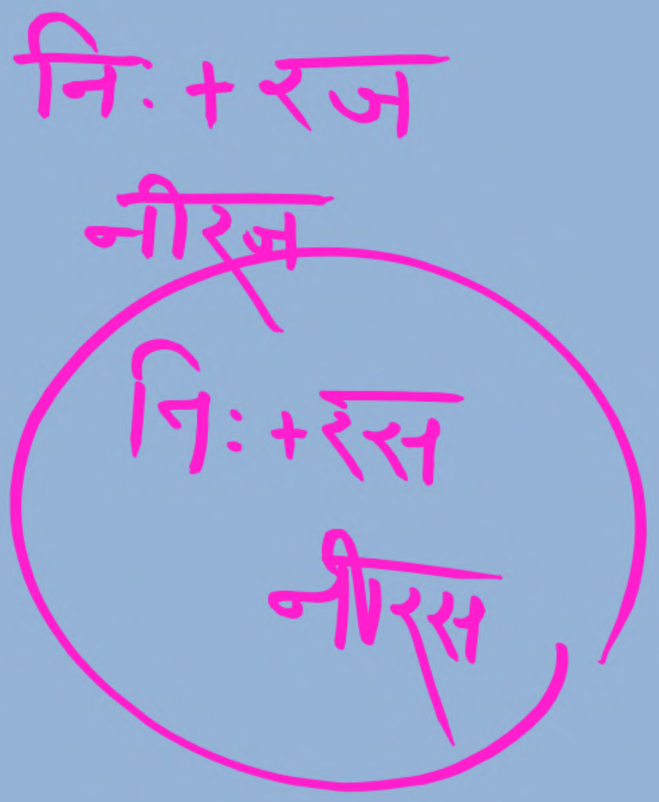

हिंदी

① कितनी उप-भाषा ? → 5

② हिन्दी कुल कितनी बोलियां ? → 18

③ हिन्दी भाषा का विकास किस से हुआ ? → अपभ्रंश से

दो बोलियों

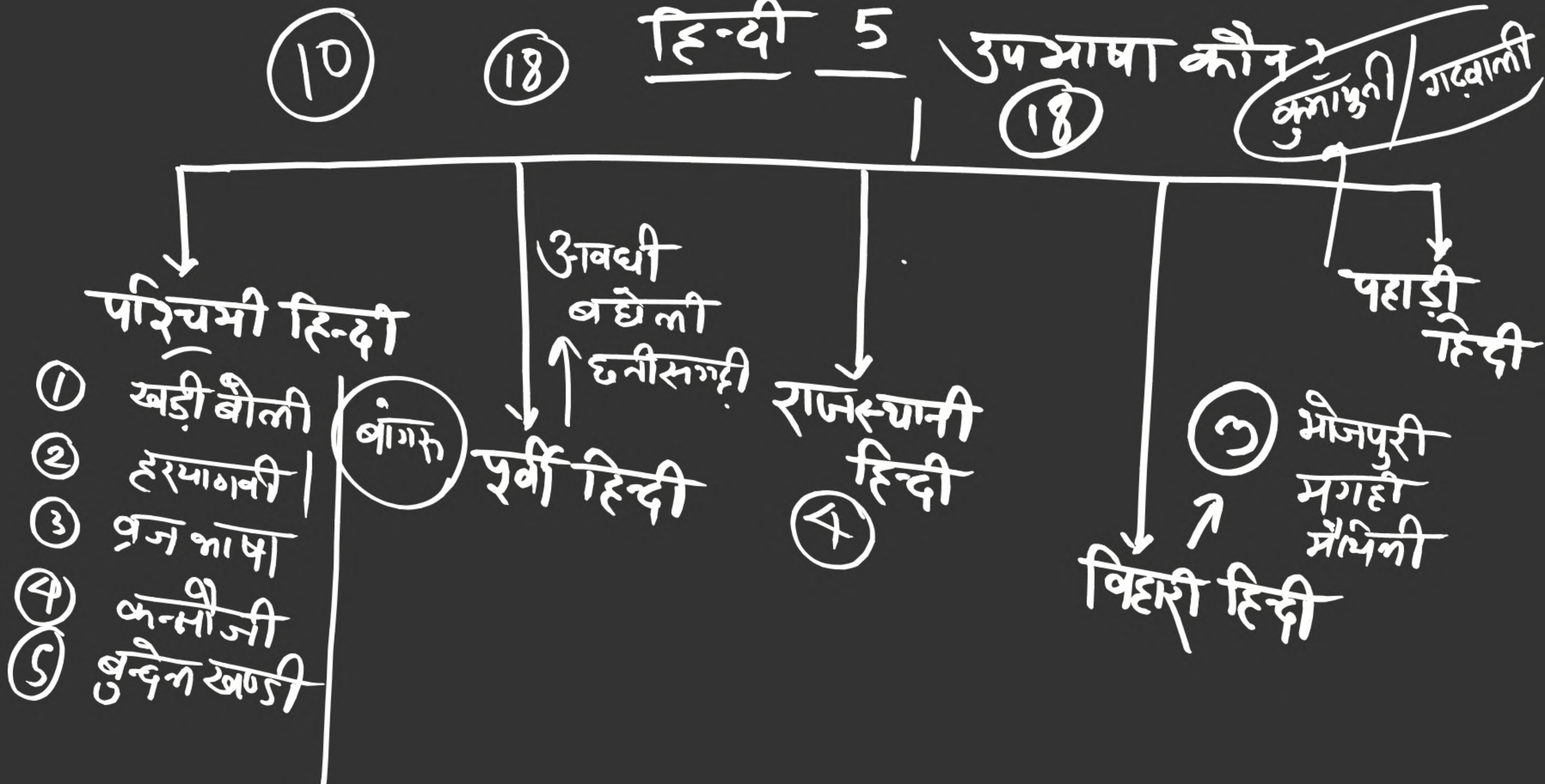
10
18
हिन्दी 5
उपभाषा कौन
18
कुमाऊनी
गढ़वाली
पश्चिमी हिन्दी
1 खड़ी बोली
2 हरयाणवी
3 ब्रज भाषा
4 कन्नौजी
5 बुन्देली खण्डी
बांगरु
पूर्वी हिन्दी
अवधी
बघेली
छत्तीसगढ़ी
राजस्थानी हिन्दी
4
3
भोजपुरी
मगही
मैथिली
बिहारी हिन्दी
पहाड़ी हिन्दी

दीर्घ

निः + रोग = नीरोग

नियम-1

स्वर : + र / ग्रह में से कुछ आ रहा है तो

इ ई

उ ऊ

विसर्ग हट जाता है और विसर्ग से पहले आने वाली मात्रा दीर्घ हो जाती है।

व्यंजन सन्धि का उदाहरण नहीं है–

(a) उत् + चारणम् = उच्चारणम्

(b) रामस् + टीकते = रामष्टीकते

(c) गंगा + उदकम् = गंगोदकम्

(d) सत् + चित् = सच्चित्

'अभिन्न' शब्द का सन्धि–विच्छेद होगा–

(a) अभि + न्न

(b) अ + भिन्न

(c) अभित् + न

(d) अनि् + न

'अनंत' की सही सन्धि होगी–

(a) अन् + अंत

(b) अन + अंत

(c) अनन् + त

(d) अनन + त्

'तकदीर' का शुद्ध सन्धि–विच्छेद है–

(a) तद + आकार

(b) तत् + आकार

(c) तदा + कार

(d) तदा + आकार

'उद्योग' का सन्धि होगा–

(a) उत् + योग

(b) उद् + योग

(c) उध + योग

(d) उत् + अयोग

'ऋग्वेद' का सही सन्धि–विच्छेद है:

(a) ऋग + वेद

(b) ऋग् + वेद

(c) ऋक् + वेद

(d) ऋ + वेद

दिक् + गज' की सन्धि है–

(a) दिकगज

(b) दिग्गज

(c) दिगज

(d) कोई नहीं

'तल्लीन' शब्द में सही सन्धि–विच्छेद है–

(a) तल् + लीन

(b) तद् + लीन

(c) तत + लीन

(d) तत् + लीन

'जगन्नाथ' शब्द में सही सन्धि है–

(a) स्वर सन्धि

(b) विसर्ग सन्धि

(c) व्यंजन सन्धि

(d) इनमें से कोई नहीं

किस शब्द में व्यंजन सन्धि है?

(a) सज्जन

(b) परोपकार

(c) विद्यालय

(d) इत्यादि

भगवद्गीता का सन्धि–विच्छेद है–

(a) भगवद् + गीता

(b) भग + वद् + गीता

(c) भगवत् + गीता

(d) भग + वद्गीता

नवोढ़ा का सन्धि–विच्छेद है–

(a) नव + उढ़ा

(b) नवो + ढ़ा

(c) नव + ऊढ़ा

(d) न + ओढ़ा